© December 2025 | IJIRT | Volume 12 Issue 7 | ISSN: 2349-6002

राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (NUHM) के क्रियान्वयन में स्थानीय स्वशासन और जनप्रतिनिधियों की सहभागिता: करौली जिले का विश्लेषण

टीना कुमारी [1], प्रो. (डॉ.) राजेश चौहान [2]

[1]शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बूंदी, राजस्थान

[2]शोध पर्यवेक्षक, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बूंदी, राजस्थान

सारांश राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (NUHM) भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है, जिसका उद्देश्य शहरी क्षेत्रों में रहने वाले गरीब, वंचित और असुरक्षित समुदायों को गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना है। शहरी क्षेत्रों में विशेष रूप से झुग्गी बस्तियों में रहने वाले लोगों को स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुंचने में अनेक बाधाएँ आती हैं, जैसे—अस्वच्छ वातावरण, स्वास्थ्य केंद्रों की दूरी, कम आय, और असंगठित रोजगार। इन चुनौतियों को देखते हुए NUHM ऐसी स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराने का प्रयास करता है, जो आसानी से सुलभ, किफायती और सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध हों।

इस मिशन के प्रभावी क्रियान्वयन में स्थानीय स्वशासन संस्थाओं—नगर पालिका, नगर परिषद, नगर निगम—का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये संस्थाएँ सीधे नागरिकों के संपर्क में रहती हैं और स्थानीय जरूरतों की सही पहचान कर सकती हैं। वार्ड स्तर के पार्षद और अन्य जनप्रतिनिधि जमीनी स्तर पर लोगों की समस्याओं को बेहतर समझते हैं, इसलिए वे स्वास्थ्य योजनाओं को जनता तक पहुँचाने में अहम भूमिका निभाते हैं। वे स्वास्थ्य सेवाओं से संबंधित शिकायतों को सुनने, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों का निरीक्षण करने, बजट आवंटन में सहयोग करने और जागरूकता फैलाने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

करौली जिले के संदर्भ में देखा जाए तो यहाँ शहरी आबादी तेजी से बढ़ रही है, पर स्वास्थ्य अवसंरचना उतनी गति से नहीं बढ़ पाई है। जिले के अधिकांश शहरी क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या सीमित है, स्वास्थ्य कर्मियों की कमी है और स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच में असमानता दिखाई देती है। संसाधनों की उपलब्धता तथा वित्तीय प्रबंधन भी एक बड़ी चुनौती है। इसके अलावा, प्रशासनिक प्रक्रियाओं में धीमापन, योजनाओं की कम जानकारी और जनप्रतिनिधियों की सीमित सहभागिता भी NUHM की प्रगति को प्रभावित करती है।

इस शोध में करौली जिले की नगर परिषदों और नगर पालिकाओं के संदर्भ में NUHM के क्रियान्वयन का विश्लेषण किया गया है, जिसमें नेतृत्व की भूमिका, प्रशासनिक समन्वय, स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता, नागरिक सहभागिता तथा योजनाओं के परिणामों का मूल्यांकन शामिल है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जहाँ जनप्रतिनिधि सक्रिय होकर निरीक्षण, सहयोग और जनजागरूकता में भूमिका निभाते हैं, वहाँ NUHM का प्रभाव बेहतर दिखता है। वहीं, जहाँ सहभागिता सीमित है, वहाँ स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता और उपलब्धता दोनों प्रभावित होती हैं।

कुल मिलाकर, यह अध्ययन बताता है कि यदि स्थानीय स्वशासन की भूमिका को मजबूत किया जाए, जनप्रतिनिधियों को पर्याप्त प्रशिक्षण दिया जाए, और स्वास्थ्य सेवाओं के लिए संसाधन बढ़ाए जाएँ, तो करौली जिले में NUHM को अधिक प्रभावी और परिणामकारी बनाया जा सकता है। यह न केवल शहरी स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत करेगा, बल्कि गरीब और कमजोर वर्गों के जीवन-स्तर को भी बेहतर बनाने में योगदान देगा।

मुख्य शब्द (Key Words):राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (NUHM), स्थानीय स्वशासन, जनप्रतिनिधि सहभागिता, शहरी स्वास्थ्य सेवाएँ, करौली जिला विश्लेषण

I. प्रस्तावना

भारत में शहरीकरण की गति पिछले कुछ दशकों में अत्यधिक बढ़ी है, जिसके परिणामस्वरूप शहरों में जनसंख्या घनत्व और स्वास्थ्य सेवाओं पर दबाव निरंतर बढ़ता जा रहा है। शहरी क्षेत्रों में बड़ी संख्या में ऐसे लोग निवास करते हैं जो आर्थिक रूप से कमजोर हैं, असंगठित क्षेत्र से जुड़े हैं या प्रवासी मजदूर हैं। इन वर्गों को स्वास्थ्य सुविधाओं तक पहुँचने में कई तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है—जैसे सीमित आय, स्वास्थ्य केंद्रों से दूरी, अस्वच्छ रहने की स्थिति, पोषण की कमी और स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता का अभाव। इन समस्याओं के समाधान हेतु 2013 में राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (NUHM) की शुरुआत की गई। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य है कि हर शहरी नागरिक, विशेषकर गरीब और हाशिए पर रहने वाले लोग, गुणवत्तापूर्ण प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं तक समान रूप से पहुँच सकें और स्वास्थ्य असमानताएँ कम हों।

NUHM की सफलता स्थानीय स्तर पर योजनाओं के प्रभावी संचालन पर निर्भर करती है, और इसी कारण स्थानीय स्वशासन प्रणालियाँ (Urban Local Bodies—ULBs) जैसे नगर परिषद, नगर पालिका और नगर निगम महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये संस्थाएँ न केवल शहरी क्षेत्रों की आवश्यकताओं को बेहतर समझती हैं, बल्कि स्थानीय समस्याओं का त्वरित समाधान भी सुनिश्चित कर सकती हैं। निर्वाचित जनप्रतिनिधि—पार्षद, चेयरमैन, उप-चेयरमैन आदि—स्थानीय

नागरिकों के सबसे निकट होते हैं, और उनकी जिम्मेदारी होती है कि वे स्वास्थ्य सेवाओं में मौजूद कमियों की पहचान कर आवश्यक सुधार सुनिश्चित करें। उनकी भागीदारी से योजनाओं की निगरानी, संसाधनों का उचित उपयोग, जागरूकता अभियान, और स्वास्थ्य केंद्रों के संचालन में पारदर्शिता बढ़ती है।

करौली जिला, राजस्थान का एक महत्वपूर्ण जिला है, जो अपनी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहचान के साथ-साथ सामाजिक चुनौतियों के लिए भी जाना जाता है। जिले के शहरी क्षेत्रों—करौली, हिण्डौन, मंडरायल आदि—में स्वास्थ्य अवसंरचना सीमित है और तेजी से बढ़ती आबादी के कारण स्वास्थ्य सेवाओं पर दबाव बढ़ रहा है। कई वार्ड ऐसे हैं जहाँ स्लम बस्तियों और कमजोर वर्गों की संख्या अधिक है, जिसके कारण वहाँ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ भी गंभीर रूप ले लेती हैं।

इस अध्ययन का उद्देश्य है कि करौली जिले में राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन के क्रियान्वयन की वास्तविक स्थिति का विश्लेषण किया जाए और यह जाना जाए कि स्थानीय स्वशासन संस्थाएँ और निर्वाचित जनप्रतिनिधि इस मिशन में किस प्रकार सहयोग कर रहे हैं। साथ ही यह भी समझा जाए कि किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है ताकि NUHM को अधिक प्रभावी और परिणामकारी बनाया जा सके।

II. शोध समस्या

राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (NUHM) का उद्देश्य शहरी गरीबों, प्रवासी मजदूरों, झुग्गी-बस्तियों में रहने वाले परिवारों तथा अन्य असुरक्षित समूहों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना है। यह कार्यक्रम शहरी स्वास्थ्य असमानताओं को कम करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयास है। इसके बावजूद करौली जिले के नगरीय क्षेत्रों में NUHM का प्रभाव अपेक्षाकृत सीमित दिखाई देता है। शहरी क्षेत्रों में तेजी से बढ़ते जनसंख्या दबाव, अपर्याप्त स्वास्थ्य संसाधनों और सीमित प्रशासनिक क्षमता के कारण योजना अपने पूर्ण उद्देश्यों को प्राप्त नहीं कर पा रही है।

सबसे बड़ी समस्या स्वास्थ्य केंद्रों में उपलब्ध मानव संसाधनों की कमी है। कई शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (UPHCs) में चिकित्सकों, नर्सों, लैब तकनीशियनों और सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं की कमी पाई जाती है। आवश्यक दवाओं, उपकरणों और बुनियादी सुविधाओं का अभाव भी एक बड़ी चुनौती है। इस कारण नागरिकों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ समय पर नहीं मिल पातीं।

दूसरा महत्वपूर्ण मुद्दा जनप्रतिनिधियों की सीमित सहभागिता है। यद्यपि नगर परिषदों और नगर पालिकाओं के निर्वाचित सदस्य स्थानीय स्तर की समस्याओं को अच्छी तरह जानते हैं, परन्तु उनकी भागीदारी अक्सर केवल औपचारिक बैठकों और निरीक्षण तक सीमित रह जाती है। कई प्रतिनिधियों को NUHM के उद्देश्यों, संरचना और संचालन प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी भी नहीं होती, जिसके कारण उनकी भूमिका प्रभावी नहीं बन पाती।

इसके अतिरिक्त, योजनाओं की जानकारी का अभाव भी योजना के क्रियान्वयन को प्रभावित करता है। अनेक लाभार्थियों को यह पता ही नहीं होता कि NUHM के अंतर्गत कौन-कौन सी सेवाएँ उपलब्ध हैं, कहाँ मिलती हैं और उनसे लाभ कैसे लिया जा सकता है। जनजागरूकता की कमी, सूचनाओं का सीमित प्रसार और संचार तंत्र की कमजोरियाँ इस समस्या को और बढ़ा देती हैं।

निगरानी और मूल्यांकन प्रणाली की कमजोरी भी एक प्रमुख चुनौती है। कई बार स्वास्थ्य केंद्रों की गुणवत्ता, सेवाओं की उपलब्धता, स्टाफ की उपस्थिति और नागरिक संतुष्टि का नियमित मूल्यांकन नहीं हो पाता। इससे कमियों की पहचान देर से होती है और सुधारात्मक कदम भी समय पर नहीं उठाए जा पाते। स्थानीय स्तर पर स्वास्थ्य विभाग, नगर निकाय और जनप्रतिनिधियों के बीच समन्वय की कमी भी NUHM के सफल क्रियान्वयन में बाधा बनती है। कई बार योजनाओं का संचालन विभागीय सीमाओं में फँस जाता है और एकीकृत प्रयासों की कमी महसूस होती है।

यह प्रश्न अध्ययन का आधार है, जो आगे की विश्लेषण प्रक्रिया को दिशा प्रदान करता है।

III. शोध उद्देश्य

इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य करौली जिले में राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (NUHM) के क्रियान्वयन की वास्तविक स्थिति को समझना और इसका विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करना है। NUHM का लक्ष्य शहरी गरीब समुदायों को गुणवत्तापूर्ण, सुलभ और किफायती स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना है, इसलिए यह शोध इस बात पर केंद्रित है कि करौली जिले में यह मिशन कितनी प्रभावी तरीके से लागू हो रहा है।

इस शोध का पहला उद्देश्य है—**करौली जिले में NUHM के वर्तमान क्रियान्वयन की स्थिति का अध्ययन करना।** इसके तहत यह समझा जाएगा कि जिले के विभिन्न शहरी क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की स्थिति, उपलब्ध संसाधन, सेवाओं की गुणवत्ता और स्वास्थ्य कर्मियों की उपलब्धता कैसी है।

दूसरा उद्देश्य है—**योजना के संचालन में स्थानीय स्वशासन संस्थाओं की भूमिका का विश्लेषण करना।** चूँकि नगर परिषद, नगर पालिका और अन्य नगरीय निकाय NUHM के क्रियान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इसलिए यह जानना आवश्यक है कि वे किस प्रकार योगदान दे रहे हैं और उनकी जिम्मेदारियाँ किस स्तर तक पूरी हो रही हैं।

तीसरा उद्देश्य है—**जनप्रतिनिधियों (जैसे पार्षद, चेयरमैन, उप-चेयरमैन आदि) की सहभागिता और उनके योगदान का आकलन करना।** अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि जनप्रतिनिधि कितनी सक्रियता से स्वास्थ्य योजनाओं की निगरानी, प्रोत्साहन और समस्या समाधान में हिस्सा लेते हैं।

चौथा उद्देश्य है—**NUHM के क्रियान्वयन में आने वाली प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।** इसमें मानव संसाधनों की कमी, वित्तीय बाधाएँ, प्रशासनिक कठिनाइयाँ, जनजागरूकता की कमी और समन्वय की कमजोरियाँ जैसी समस्याएँ शामिल हैं।

अंतिम उद्देश्य है—**NUHM के बेहतर और प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।** अध्ययन के आधार पर ऐसे व्यावहारिक सुझाव दिए जाएंगे जो करौली जिले में शहरी स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत करने और NUHM के लक्ष्यों को बेहतर तरीके से प्राप्त करने में सहायक हों।

इन उद्देश्यों के माध्यम से शोध का लक्ष्य न केवल वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना है, बल्कि भविष्य के लिए सुधारात्मक दिशा भी प्रदान करना है।

IV. शोध विधि

इस अध्ययन में **वर्णनात्मक (Descriptive) और विश्लेषणात्मक (Analytical)** दृष्टिकोण अपनाया गया है। इसका उद्देश्य करौली जिले में राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (NUHM) के क्रियान्वयन की स्थिति और स्थानीय स्वशासन तथा जनप्रतिनिधियों की भूमिका का विस्तृत अध्ययन करना है। वर्णनात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से NUHM के क्रियान्वयन की वास्तविक स्थिति को समझा

गया और उपलब्ध आंकड़ों, रिपोर्टों और प्राथमिक जानकारी के आधार पर कार्यक्रम की प्रगति का विवरण प्रस्तुत किया गया। विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण का उपयोग मुख्यतः समस्याओं, चुनौतियों और जनप्रतिनिधियों की सहभागिता के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए किया गया।

डेटा स्रोत: इस अध्ययन में दो प्रकार के डेटा का उपयोग किया गया है—

प्राथमिक जानकारी (Primary Data):

- नगर परिषद और नगर पालिका के निर्वाचित जनप्रतिनिधियों (पार्षद, चेयरमैन, उप-चेयरमैन) के साथ व्यक्तिगत साक्षात्कार।
- स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों और कर्मचारी (ANM/ASHA कार्यकर्ता) के साथ बातचीत और प्रश्नावली आधारित साक्षात्कार।
- लाभार्थियों से उनके अनुभव और स्वास्थ्य सेवाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

द्वितीयक जानकारी (Secondary Data):

- सरकारी रिपोर्टें और आधिकारिक दस्तावेज जैसे NUHM योजना दस्तावेज, वार्षिक रिपोर्टें।
- नगर पालिका और नगर परिषद के अभिलेख, बजट रिपोर्ट और संचालन से संबंधित रिकॉर्ड।
- स्वास्थ्य विभाग के सांख्यिकी डेटा, जैसे टीकाकरण संख्या, स्वास्थ्य केंद्रों की स्थिति, और कर्मचारी उपलब्धता।

अध्ययन क्षेत्र: यह शोध करौली जिले के तीन प्रमुख नगरीय निकायों—करौली नगर परिषद, हिण्डौन नगर परिषद और मंडरेड नगर पालिका—पर केंद्रित है। इन क्षेत्रों को चयनित करने का कारण उनकी शहरी आबादी की विविधता और स्वास्थ्य सेवाओं में अंतर है।

नमूना चयन:

12 निर्वाचित जनप्रतिनिधि (पार्षद, चेयरमैन, उप-चेयरमैन)

6 स्वास्थ्य विभाग अधिकारी (UPHC प्रबंधक, ANM, PHC सुपरवाइज़र)

20 लाभार्थी (शहरी गरीब और स्लम क्षेत्र के निवासी)

इस विधि के माध्यम से अध्ययन ने **NUHM के संचालन की वास्तविक स्थिति, स्थानीय स्वशासन और जनप्रतिनिधियों की भूमिका, योजनाओं की चुनौतियाँ और नागरिक अनुभव** का व्यापक और विश्वसनीय मूल्यांकन किया है।

V. राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (NUHM): एक संक्षिप्त परिचय

राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (NUHM) भारत सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसे 2013 में शुरू किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य शहरी गरीब, झुग्गी बस्तियों में रहने वाले परिवार, असंगठित क्षेत्र के श्रमिक और अन्य कमजोर वर्गों को सस्ती, सुलभ और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करना है। शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में भिन्न और अधिक जटिल होती हैं, क्योंकि शहरों में आबादी अधिक है, आवास असुरक्षित हैं और कई लोग असंगठित रोजगार में संलग्न हैं। ऐसे में NUHM का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि शहरी गरीब और हाशिए पर रहने वाले लोग स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित न रहें और उनके जीवन स्तर में सुधार हो।

NUHM की प्रमुख गतिविधियाँ और घटक इस प्रकार हैं—

1. **शहरी प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (UPHC) की स्थापना:** UPHC शहरी क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं का मुख्य केंद्र हैं। ये स्वास्थ्य केंद्र रोगियों को नियमित परामर्श, उपचार, दवा और स्वास्थ्य जांच की सुविधाएँ प्रदान करते हैं। UPHC का उद्देश्य स्थानीय नागरिकों को उनके नजदीकी क्षेत्र में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराना है।
2. **मोबाइल चिकित्सा इकाइयाँ:** उन क्षेत्रों में जहाँ UPHC तक पहुँच मुश्किल है, वहाँ मोबाइल मेडिकल यूनिट्स (MMUs) स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करती हैं। ये इकाइयाँ टीकाकरण, जांच और प्राथमिक उपचार जैसी सेवाएँ स्थानीय समुदायों तक पहुँचाती हैं।
3. **सामुदायिक स्वास्थ्य कर्मी (ASHA):** ASHA और ANM जैसे सामुदायिक स्वास्थ्य कर्मी ग्रामीण और शहरी गरीब वर्गों में स्वास्थ्य जागरूकता फैलाने, मातृ-शिशु स्वास्थ्य की देखभाल और टीकाकरण अभियान चलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
4. **शहरी स्वास्थ्य और पोषण दिवस:** नियमित अंतराल पर आयोजित किए जाने वाले यह दिवस नागरिकों को स्वास्थ्य परीक्षण, पोषण परामर्श, टीकाकरण और स्वच्छता संबंधी जानकारी प्रदान करते हैं।
5. **टीकाकरण:** शहरी गरीब और असुरक्षित आबादी में बच्चों और माताओं के टीकाकरण का लक्ष्य NUHM का एक प्रमुख घटक है। इससे संक्रामक रोगों की रोकथाम और स्वास्थ्य सुरक्षा सुनिश्चित होती है।
6. **मातृ-शिशु स्वास्थ्य सेवाएँ:** गर्भवती महिलाओं, स्तनपान कराने वाली माताओं और नवजात शिशुओं के लिए स्वास्थ्य सेवाओं का विशेष प्रावधान है। इन सेवाओं में नियमित जांच, पोषण परामर्श और स्वास्थ्य शिक्षा शामिल हैं।
7. **गैर-संक्रामक रोगों की रोकथाम:** शहरी क्षेत्रों में जीवनशैली संबंधी बीमारियाँ जैसे मधुमेह, हृदय रोग और उच्च रक्तचाप बढ़ रहे हैं। NUHM इन बीमारियों की रोकथाम, जागरूकता और नियमित जांच पर ध्यान केंद्रित करता है।

कुल मिलाकर, NUHM शहरी स्वास्थ्य प्रणाली को मजबूत बनाने और असुरक्षित वर्गों तक सेवाओं की पहुँच सुनिश्चित करने के लिए एक समग्र और व्यापक योजना है। इसका उद्देश्य केवल उपचार प्रदान करना नहीं, बल्कि स्वास्थ्य शिक्षा, जागरूकता, रोकथाम और सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से शहरी गरीबों के जीवन स्तर में स्थायी सुधार लाना है।

VI. करौली जिले में NUHM की स्थिति (लगभग 400 शब्द, विस्तारित और सरल भाषा में)

करौली जिला, राजस्थान का एक ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण जिला है। यहाँ शहरीकरण की गति लगातार बढ़ रही है, जिससे नगर क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की मांग भी तेजी से बढ़ रही है। बावजूद इसके, जिले में स्वास्थ्य अवसंरचना और संसाधनों की उपलब्धता अभी भी सीमित है, जिससे शहरी गरीब और असुरक्षित वर्गों तक गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाना चुनौतीपूर्ण बन रहा है। राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (NUHM) का उद्देश्य इन्हीं समस्याओं को कम करना और शहरी गरीबों के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ बनाना है।

6.1 उपलब्ध सुविधाएँ

करौली जिले में NUHM के अंतर्गत वर्तमान में निम्न सुविधाएँ उपलब्ध हैं:

- **शहरी** प्राथमिक **स्वास्थ्य केंद्र (UPHC):** जिले में कुल **3 UPHC** संचालित हो रहे हैं। ये केंद्र स्थानीय नागरिकों को प्राथमिक उपचार, नियमित स्वास्थ्य जांच, दवाओं की उपलब्धता और स्वास्थ्य शिक्षा प्रदान करते हैं।
- सामुदायिक **स्वास्थ्य कार्यकर्ता:** जिले में लगभग **25 ASHA कार्यकर्ता** सक्रिय रूप से मातृ-शिशु स्वास्थ्य, टीकाकरण और स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों में भाग ले रहे हैं।
- टीकाकरण **कार्यक्रम:** करौली जिले में बच्चों और माताओं के टीकाकरण कार्यक्रम नियमित रूप से चलाए जाते हैं, जिससे संक्रामक रोगों को नियंत्रित करने में मदद मिलती है।
- **मोबाइल स्वास्थ्य सेवाएँ:** मुश्किल और दूरदराज के इलाकों तक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँचाने के लिए मोबाइल चिकित्सा इकाइयाँ सीमित रूप से उपलब्ध हैं। ये इकाइयाँ समय-समय पर स्लम क्षेत्रों और असुरक्षित बस्तियों में जाकर स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करती हैं।

6.2 प्रमुख चुनौतियाँ

हालाँकि NUHM के माध्यम से कुछ सुविधाएँ उपलब्ध हैं, परंतु जिले में इसके क्रियान्वयन में कई चुनौतियाँ बनी हुई हैं:

चिकित्सकों का अभाव: UPHC और अन्य स्वास्थ्य केंद्रों में पर्याप्त संख्या में चिकित्सक और विशेषज्ञ नहीं हैं, जिससे मरीजों को समय पर इलाज प्राप्त नहीं हो पाता।

आवश्यक दवाओं और उपकरणों की कमी: स्वास्थ्य केंद्रों में दवाओं, चिकित्सा उपकरणों और अन्य बुनियादी संसाधनों की कमी एक बड़ी बाधा है।

प्रबंधन और वित्तीय संसाधनों की कमी: योजनाओं के प्रभावी संचालन के लिए आवश्यक बजट और प्रबंधन व्यवस्था सीमित है, जिससे कार्यक्रम की कार्यक्षमता प्रभावित होती है।

स्लम क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं की न्यूनतम उपलब्धता: करौली जिले के कुछ शहरी क्षेत्र, विशेषकर स्लम और असुरक्षित बस्तियाँ, स्वास्थ्य सेवाओं से पूरी तरह लाभान्वित नहीं हो पाती।

जनप्रतिनिधियों द्वारा निगरानी का अभाव: नगर परिषद और नगर पालिका के निर्वाचित सदस्य स्वास्थ्य केंद्रों और योजनाओं की निगरानी में सीमित रूप से शामिल हैं, जिससे योजनाओं की प्रभावशीलता प्रभावित होती है।

इन चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए यह स्पष्ट होता है कि करौली जिले में NUHM की उपलब्धियाँ तो हैं, लेकिन प्रभावी और समग्र स्वास्थ्य सेवाओं के लिए संसाधनों, मानव शक्ति, निगरानी और स्थानीय सहभागिता में सुधार की आवश्यकता है।

7. स्थानीय स्वशासन संस्थाओं की भूमिका

नगरपालिका/नगर परिषद NUHM के संचालन में निम्न जिम्मेदारियाँ निभाती है—

7.1 योजना निर्माण और स्थानीय जरूरतों की पहचान

स्थानीय स्तर पर जनप्रतिनिधि ही सबसे पहले यह पहचानते हैं कि कौन-से वार्डों में स्वास्थ्य जोखिम अधिक है और किन क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की जरूरत है।

7.2 बजट आवंटन और निगरानी

नगर निकाय स्वास्थ्य केंद्रों के रखरखाव, सफाई व्यवस्था, जल आपूर्ति, दवा आपूर्ति और बजट का प्रबंधन करते हैं।

7.3 जनजागरूकता अभियान

जनप्रतिनिधि स्लम क्षेत्रों में जागरूकता कार्यक्रम चला सकते हैं, जिनमें साफ-सफाई, टीकाकरण, पोषण, गर्भवती महिलाओं की देखभाल आदि शामिल हैं।

7.4 प्रशासनिक समन्वय

स्वास्थ्य विभाग, नगर परिषद और नागरिकों के बीच समन्वय स्थापित करने में जनप्रतिनिधियों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

8. NUHM के क्रियान्वयन में जनप्रतिनिधियों की वास्तविक सहभागिता : करौली जिले का विश्लेषण

8.1 सकारात्मक पक्ष

- कुछ पार्षद नियमित रूप से UPHC का निरीक्षण करते हैं।
- कई प्रतिनिधि टीकाकरण शिविरों में सक्रिय रहते हैं।
- सफाई व्यवस्था में सुधार हेतु प्रतिनिधियों ने पहल की है।

8.2 सीमाएँ

- अधिकांश जनप्रतिनिधियों को NUHM के उद्देश्यों की पूर्ण जानकारी नहीं।
- स्वास्थ्य केंद्रों में संसाधन उपलब्ध कराने में राजनीतिक हस्तक्षेप प्रभावी नहीं।
- बैठकें और समीक्षा कार्यवाही नियमित नहीं होती।
- अनेक प्रतिनिधि स्वास्थ्य के बजाय अन्य मुद्दों पर अधिक ध्यान देते हैं।

8.3 नागरिक दृष्टिकोण

लाभार्थियों के अनुसार—

- स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध तो हैं लेकिन पर्याप्त नहीं।
- कई सुविधाएँ वार्ड-विशेष तक सीमित।
- जनप्रतिनिधियों से संवाद सीमित रहता है।

IX. प्रमुख चुनौतियाँ

1. अपर्याप्त स्वास्थ्य अवसंरचना
2. जनप्रतिनिधियों का सीमित प्रशिक्षण
3. वित्तीय संसाधनों की कमी
4. स्वास्थ्य कर्मियों की कमी
5. स्लम क्षेत्रों में पहुँच की समस्या
6. निगरानी और मूल्यांकन तंत्र कमजोर
7. जनजागरूकता का अभाव

X. सुझाव

1. जनप्रतिनिधियों के लिए स्वास्थ्य प्रशिक्षण कार्यक्रम

NUHM के मानकों, लक्ष्यों और कार्यप्रणाली का प्रशिक्षण आवश्यक है।

2. संसाधनों का उचित आवंटन

UPHC में डॉक्टर, नर्स, दवाएँ और उपकरणों की उपलब्धता बढ़ाई जाए।

3. वार्ड-स्तरीय स्वास्थ्य समिति का गठन
हर वार्ड में स्वास्थ्य समितियाँ सक्रिय की जाएँ, जिनमें जनप्रतिनिधि, ASHA, ANM और नागरिक सदस्य शामिल हों।

4. निगरानी प्रणाली मजबूत हो
मासिक बैठकें अनिवार्य की जाएँ और रिपोर्ट ऑनलाइन दर्ज की जाए।

5. नागरिक सहभागिता बढ़ाई जाए
सफाई जागरूकता, पोषण अभियान, टीकाकरण रैली आदि में जनप्रतिनिधि सक्रिय भूमिका निभाएँ।

6. स्लम क्षेत्रों में विशेष मोबाइल सेवाएँ
जहाँ UPHC पहुंचना कठिन है, वहाँ मोबाइल यूनिट नियमित चलाई जाए।

XI. निष्कर्ष

राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (NUHM) शहरी गरीब, असंगठित श्रमिक और हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण स्वास्थ्य कार्यक्रम है। करौली जिले में इस मिशन का क्रियान्वयन कई क्षेत्रों में प्रगति दिखाता है, जैसे टीकाकरण अभियान, मातृ-शिशु स्वास्थ्य सेवाएँ और जागरूकता कार्यक्रम। स्थानीय स्वशासन संस्थाएँ और निर्वाचित जनप्रतिनिधि जमीनी स्तर पर योजनाओं के क्रियान्वयन में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। उनके सक्रिय योगदान से स्वास्थ्य केंद्रों की निगरानी, बजट प्रबंधन और नागरिक जागरूकता में सुधार संभव होता है।

हालाँकि, करौली जिले में NUHM की प्रभावशीलता अभी भी कुछ चुनौतियों के कारण सीमित है। जनप्रतिनिधियों की सीमित जानकारी, संसाधनों की कमी, निगरानी तंत्र का कमजोर होना और स्लम क्षेत्रों तक स्वास्थ्य सेवाओं की असमान पहुँच मुख्य बाधाएँ हैं। लाभार्थियों के अनुभव बताते हैं कि स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध हैं, लेकिन उनकी पहुँच और गुणवत्ता पर्याप्त नहीं है।

इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि NUHM की सफलता के लिए केवल योजनाओं का निर्माण पर्याप्त नहीं है। आवश्यक है कि स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को सशक्त किया जाए, जनप्रतिनिधियों को प्रशिक्षण और संसाधन उपलब्ध कराए जाएँ, और समुदाय आधारित निगरानी एवं सहभागिता को बढ़ावा दिया जाए। यदि ये कदम उठाए जाएँ, तो करौली जिले में NUHM के माध्यम से शहरी स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता, पहुँच और प्रभावशीलता में महत्वपूर्ण सुधार संभव है, जिससे नागरिकों का जीवन स्तर बेहतर होगा।

संदर्भ

[1] भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय. "राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन (NUHM)." Rourkela Municipal Corporation, https://www.rmc.nic.in/nuhm.html. पहुँच: Dec. 2025. RMC

[2] "National Urban Health Mission (NUHM)." National HealthMission, महाराष्ट्र सरकार, https://nhm.maharashtra.gov.in/en/scheme/national-urban-health-mission-nuhm/. पहुँच: Dec. 2025. National Health Mission Maharashtra

[3] "NUHM – GOAL & Outcomes." National Health Mission, Government of India, https://upnrhm.gov.in/NUHM/Goal. पहुँच: Dec. 2025. UP National Health Mission

[4] "National Urban Health Mission (NUHM)." National Health Mission, राजस्थान स्वास्थ्य विभाग/सरकारी प्रकाशन. (बुनियादी मिशन उद्देश्य और क्रियान्वयन निर्धारण पर आधिकारिक विवरण) National Health Mission

[5] "NUHM Implementation Framework." National Health Mission Training Module for Planners & Implementers, NHSRC, Government of India,

[6] https://www.nhm.gov.in/images/pdf/NUHM/Orientation_module_for_planners_implementers_and_partners.pdf. पहुँच: Dec. 2025. National Health Mission

[7] "National Urban Health Mission." National Health Systems Resource Centre (NHSRC), Ministry of Health & Family Welfare, Government of India, https://qps.nhsrcindia.org/national-urban-health-mission. पहुँच: Dec. 2025. National Health Systems Resource Centre

[8] "राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (National Health Mission)." दक्षिण-पश्चिम दिल्ली सरकार, https://dmsouthwest.delhi.gov.in/hi/scheme/राष्ट्रीय-स्वास्थ्य- मिशन/. पहुँच: Dec. 2025. District South West Delhi

[9] "NUHM – Introduction." National Health Mission, Government of Odisha, https://nhmodisha.gov.in/nuhm_introduction. पहुँच: Dec. 2025. National Health Mission Odisha

[10] "National Urban Health Mission (NUHM)." National Health Mission, Government of Sikkim, https://nhmsikkim.org/programmes/nuhm/. पहुँच: Dec. 2025. National Health Mission Sikkim

[11] राष्ट्रीय शहरी स्वास्थ्य मिशन दस्तावेज और सरकारी रिपोर्टें, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार (नीतिगत योजनाओं, मार्गदर्शिकाएँ, UPHC/ASHA/ANM संचालन दिशा-निर्देशों पर आधिकारिक प्रकाशन) ।